प्रश्न—पंत की काव्य-भाषा पर निबन्ध लिखिए.

उत्तर—सुमित्रानन्दन पंत का काव्य भावना और कल्पना की दृष्टि से जितना महत्वपूर्ण है उतना ही आकर्षक इसका कला विधान भी है. कला विधान का आकर्षक होना इस बात का सूचक है कि पंत ने अपने काव्य में अनुभूति के अनुकूल अभिव्यक्ति को महत्त्व दिया है. तात्पर्य यह है कि पंत का काव्य अनुभूतियों का जैसा सरस और मनोहर चित्र प्रस्तुत करता है वैसा ही भावानुकूल-प्रसंगानुकूल और सन्दर्भानुकूल उसका अभिव्यक्ति पक्ष भी है. ठीक भी है, जो कवि अनुभूति के अनुकूल अभिव्यक्ति का प्रयोग करता है अथवा अनुभूति और अभिव्यक्ति को सहचरी के रूप में प्रस्तुत करता है वही श्रेष्ठ और सफल कवि कहलाता है. कहने की आवश्यकता नहीं कि पंत ऐसे ही कवि हैं.

अभिव्यंजना-शिल्प—अभिव्यंजना शिल्प से तात्पर्य अभिव्यक्ति कौशल से है. अभिव्यक्ति कौशल के अन्तर्गत कवि की भाषा, शैली, अलंकार, योजना प्रतीक, योजना, बिम्ब योजना और काव्यरूप आदि को स्थान प्राप्त है. भाषा एवं अलंकार योजना जैसे उपकरण प्राचीनकाल से काव्य के

Scanned with CamScanner

अभिव्यंजना पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आये हैं. पंत का काव्य भी अभिव्यंजना कौशल की दृष्टि से अत्यन्त विशिष्ट और महत्वपूर्ण है. उन्होंने भाषा को कोमलता प्रदान की है, उसमें ओज, प्रसाद और माधुर्य तीनों गुणों का समावेश किया गया है.

पंतजी की भाषा-शैली–पंतजी की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी है. यह मधुर और कोमल है. उसमें प्रसाद और माधुर्य गुण पाया जाता है. व्यंजना की अपेक्षा उसमें अभिधा और लक्षणा से अधिक काम लिया गया है. साथ ही संगीतात्मकता और चित्रोपमता भी उसकी एक विशेषता है. पंतजी शब्दों के चयन में अत्यधिक सतर्क हैं. इसी कारण पंतजी की भाषा को चित्रभाषा कहा गया है. उनके शब्द, उनके भावों का सफल प्रतिनिधित्व करते हैं. सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति में उन्होंने सांकेतिक भाषा का भी प्रयोग किया है. इस प्रकार उनकी भाषा अपनी कई विशेषताओं के कारण किसी छायावादी कवि से मेल नहीं खाती है. पंतजी की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

शब्द-प्रयोग–शब्द-प्रयोग की दृष्टि से पंत की भाषा में संस्कृत के अलावा अरबी, उर्दू व फारसी के साथ ब्रजभाषा के शब्द भी मिलते हैं. इनकी कविताओं में संस्कृत शब्दावली पर्याप्त मात्रा में मिल जायेगी. कहीं-कहीं तो पंत ने संस्कृत शब्द ही नहीं, वाक्य के वाक्य भी इस तरह प्रयुक्त किए हैं, जो संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के प्रयोग को प्रमाणित करते हैं. जहाँ तक ब्रजभाषा के शब्द-प्रयोग का प्रश्न है, वे भी पंत के काव्य में पूरी मधुरता के साथ प्रयुक्त हुए हैं. अनाज, दई, ढीठ, काजर, बहादुर और कारे जैसे शब्द ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुकूल हैं. इसी प्रकार तलैया, दूब, सनी, उफान और पौखट एवं नरम जैसे शब्द भी ब्रजभाषा के ही हैं. उर्दू, फारसी के शब्दों में निगरानी, सलाम, फलक, मसखरा, मजलिस आदि शब्दों को लिया जा सकता हैं. अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी पंत की कविताओं में मिल जाता है.

मुहावरों और कहावतों का प्रयोग–भाषा को अधिकाधिक उपयुक्त एवं प्रेषणीय बनाने के उद्देश्य से पंतजी ने आठ आँसू रोते निरुपाय, साँप लोटते फटती छाती, उसे देख आँसू आते भर और 'यह सोच हृदय उठता पसीज' जैसे मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी किया है. इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा में पर्याप्त आकर्षण आ गया है. वह सामान्य पाठक की चेतना को भी प्रभावित करती है.

चित्रात्मकता–पंतजी की भाषा की तीसरी विशेषता चित्रात्मकता है 'मौन निमन्त्रण', 'हिमाद्री' और 'चाँदनी' जैसी कविताओं में भाषा की चित्रात्मकता को देखा जा सकता है. पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'द्रुत झरो', 'प्रथम रश्मि' और 'आँसू की बालिका' कविताओं में भी भाषा की इसी चित्रात्मकता

Scanned with CamScanner

की देखा जा सकता है. पंत की भाषा की चित्रात्मकता का एक उदाहरण देखिए–

"नीले नभ के शतदल पर
वह बैठी शारद-हासिनी,
मृदु करतल पर शशि, मुख धर,
नीरव, अनिमिष एकाकिनी।"

अनेक स्थलों पर कवि ने इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है. धूप के वर्णन में कवि ने जिस शब्दावली का प्रयोग किया है. उससे चित्रात्मक भाषा का स्वरूप प्रकट होता है. चित्रात्मकता के कारण प्रेषणीयता भी बढ़ गयी है.

कोमलकान्त पदावली–पंतजी की भाषा की एक अन्य विशेषता उनके द्वारा प्रयुक्त कोमलकान्त पदावली है. कोमलकान्त पदावली को 'प्रथम रश्मि' कविता में देखा जा सकता है. पूरी कविता कोमलकान्त शब्दों एवं भाषा के माधुर्य गुण से ओत-प्रोत है. माधुर्य गुण के कारण अनेक सुन्दर कल्पनाएँ पाठकों के मन को प्रभावित करती हुई पंत की प्रतिभा का दिग्दर्शन कराती हैं.

ध्वन्यात्मकता–पंत-काव्य की भाषा का एक रूप ध्वन्यात्मकता से जुड़ा हुआ है. इस दृष्टि से पंत की "बाँसों का झुरमुट, संध्या का झुरपुट, हैं चहक रहीं चिड़ियाँ" आदि पंक्तियाँ सर्वाधिक प्रभावित करती हैं. नौका विहार की "मृदु मन्द-मन्द में मंथर-मंथर", लघु तरणि हंसिनी-सी सुन्दर है, तीर रही खोल पालों के पर" में कितनी सुन्दर शब्दावली का चयन हुआ है. प्रत्येक शब्द से ध्वनि फूट रही है. यहाँ पूर्ण कलात्मकता का रूप देखा जा सकता है, किन्तु जहाँ आध्यात्मिकता का भाव कवि-हृदय में आ पड़ा है. वहाँ संस्कृत की तत्सम दार्शनिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है. 'युगवाणी' की 'पुष्प प्रसून' कविता में भाषा का बिल्कुल बदला हुआ रूप मिलता है. छोटे-छोटे शब्द बिहारी के दोहों की भाँति हैं, किन्तु अपना अर्थ अपनी ध्वनि के द्वारा ही प्रकट कर देते हैं. 'स्वर्ण धूल' की 'सावन मेघ' कविता में सावन के पागल बादलों का चित्र अंकित करने के लिए कवि ने अनेक प्रकार की ध्वनियाँ एकत्र करके भाषा के ध्वन्यात्मक रूप को प्रस्तुत किया है–

"झम झम झम झम मेघ बरसते रे सावन के,
छम छम छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम चम बिजली चमक रही छिप उर में घन के,
थम थम दिन के तम में सपने जगते मन के।"

भाषा की लाक्षणिकता–पंत-काव्य की भाषा की एक उल्लेखनीय विशेषता भाषा का लाक्षणिक प्रयोग है. भाषा का यह लाक्षणिक प्रयोग इनकी छायावादी काल की किसी भी कविता में देखा जा सकता है. सर्वाधिक लाक्षणिकता 'प्रथम

Scanned with CamScanner